

किशोरों (युवाओं) में कृषि जागरूकता बढ़ाने में विद्यालय/शैक्षणिक पाठ्यक्रम की भूमिका



स्वेता झा

प्रिंसीपल ग्रो – अनुसंधान एवं
विकास प्रबंधक

*अनुरूपी लेखक

स्वेता झा*

कृषि मानव अस्तित्व और आर्थिक स्थिरता की आधारशिला है, लेकिन अधिकांश आधुनिक समाजों में युवा धीरे-धीरे खेती और खाद्य प्रणाली से दूर हो रहे हैं। स्कूल और शैक्षणिक पाठ्यक्रम की जिम्मेदारी है कि वे इस अंतर को पाटें और किशोरों को प्रारंभिक अवस्था से कृषि ज्ञान, मूल्य और कौशल प्रदान करें। यह लेख बताता है कि कैसे स्कूल पाठ्यक्रम में कृषि को शामिल करने से युवाओं में जागरूकता बढ़ती है, कृषि कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है, सतत कृषि को बढ़ावा मिलता है और आने वाली पीढ़ी को खाद्य सुरक्षा की चुनौतियों के लिए तैयार किया जा सकता है।

दुनिया की जनसंख्या 2050 तक 9.7 अरब से अधिक हो जाने की संभावना है, जिससे कृषि उत्पादन, स्थिरता और नवाचार में भारी वृद्धि की जरूरत होगी। इसलिए यह जरूरी है कि युवा पीढ़ी को कृषि के महत्व के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए काम किया जाए। लेकिन तेजी से बढ़ता शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और जीवनशैली परिवर्तनों के कारण युवा कृषि संस्कृति से कट गए हैं।

स्कूल सामाजिककरण के मुख्य साधन हैं और स्कूल पाठ्यक्रम छात्रों के ज्ञान और दृष्टिकोण को प्रभावित करने का नियमित अवसर प्रदान करता है।

किशोरावस्था में कृषि शिक्षा को शामिल करना—जीवन के प्रारंभिक और संवेदनशील वर्षों में—यकीन दिलाता है कि युवा केवल पेशे के रूप में ही नहीं बल्कि खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण विकास के महत्वपूर्ण अंग के रूप में कृषि को महत्व देंगे।

किशोरों में कृषि जागरूकता का महत्व

1. पोषण और खाद्य सुरक्षा

छात्रों को खाद्य प्रणाली के बारे में शिक्षित करने से उन्हें यह समझ में आता है कि उनका भोजन कहाँ से आता है, और पोषण को कृषि से

जोड़कर देखने की क्षमता विकसित होती है।

2. करियर विकल्प

आधुनिक युग में कृषि अब सदैव परंपरागत खेती पर ही सीमित नहीं रहती है। जैव प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान (Agronomy), कृषि व्यवसाय, ड्रोन तकनीक और कृषि अभियांत्रिकी (Agri-Engineering) विभिन्न करियर प्रदान करते हैं। अपनी प्रारंभिक अवस्था में अपनाने के लिए इस क्षेत्र का अनुभव छात्रों को कृषि को संभावित करियर विकल्प के रूप में को सोचने के लिए उत्तेजित करता है।



युवा और कृषि

Source: <https://www.drishtiiias.com>

3. सतत विकास

जलवायु परिवर्तन और संसाधनों के क्षरण की वजह से पर्यावरण-सहायक और टिकाऊ कृषि पद्धतियों की तत्काल आवश्यकता है। युवा पीढ़ी में कृषि जागरूकता उन्हें सततता, जल संरक्षण और जैव विविधता के संरक्षण के महत्व की मूल्य सिखाती है।

4. ग्रामीण-शहरी विभाजन को पाटना

अधिकांश शहरी युवाओं का कृषि से बहुत कम संबंध है। शिक्षा प्रणाली उन्हें ग्रामीण वास्तविकताओं से अवगत कराकर शहरी पक्षपात को कम कर सकती है और कृषि के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकती है।

स्कूल पाठ्यक्रम की भूमिका

1. पाठ्यक्रम का एकीकरण

कृषि को सीधे विषयों के रूप में जोड़ा जा सकता है या अभी होते पाठ्यक्रम में एकत्र करके समग्र शिक्षा बढ़ाया जा सकता है। जीवविज्ञान में छात्र पौधों की वृद्धि, मिट्टी की उर्वरता, प्रकाश संश्लेषण और कृषि में सूक्ष्मजीवों के बारे में पढ़ सकते हैं। भूगोल में जलवायु के प्रभाव, मिट्टी के प्रकार और क्षेत्रीय फसलों के पैटर्न को जोड़ा जा सकता है, जिससे छात्र पर्यावरणीय और स्थानिक कारकों को समझ सकें। पर्यावरण विज्ञान में टिकाऊ कृषि, जल प्रबंधन, जैविक उत्पादन और जैव विविधता संरक्षण पर जोर दिया जा सकता है। यह बहु-विषयक एकीकरण न केवल अकादमिक ज्ञान को समृद्ध बनाता है बल्कि कृषि को व्यावहारिक अनुप्रयोगों से जोड़ता है, जिससे किशोरों के लिए यह अर्थपूर्ण, रोचक और प्रभावी बन जाता है।

2. व्यावहारिक शिक्षण

व्यावहारिक शिक्षण है युवाओं में वास्तविक कृषि जागरूकता का एक प्रभावी माध्यम। स्कूल का खेत या बगीचा छात्रों को पौधारोपण, पानी, कटाई जैसी व्यावहारिक कृषि गतिविधियों के हिस्से होने का मौका देता है, जो न केवल व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते हैं बल्कि जिम्मेदारी और सहयोग की भावना भी बढ़ाते हैं। प्रयोगशाला में व्यावहारिक परीक्षण, जैसे मिट्टी परीक्षण, बीज अंकुरण अध्ययन और कंपोस्टिंग, छात्रों को फसल उत्पादन और मिट्टी की उर्वरता के वैज्ञानिक सिद्धांत को समझने में मदद करता है। फील्ड ट्रिप्स जैसे कृषि अनुसंधान संस्थानों, उन्नत फार्मों या कृषि उद्योगों के दौरे छात्रों को व्यावहारिक वास्तविकता से अवगत कराते हैं, जिससे कक्षा में सिखाई गई सैद्धांतिक अवधारणाओं और वास्तविक अनुभव की दूरी कम हो जाती है और उन्हें कृषि को नवाचारपूर्ण और व्यावसायिक रूप से संभावित क्षेत्र के रूप में देखने की प्रेरणा मिलती है।

3. कृषि क्लब और पाठ्येतर गतिविधियाँ

विद्यार्थी गतिविधियाँ और कृषि क्लब विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम बाहर कृषि के अध्ययन के लिए जीवंत मंच प्रदान करते हैं। इको-क्लब, बागवानी क्लब और कृषि समाजों की स्थापना विद्यार्थियों को वृक्षारोपण, कचरा पुनर्चक्रण और जैविक बागवानी जैसी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है। ये गतिविधियाँ टीमवर्क, नेतृत्व और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देती हैं, साथ ही रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमता को भी प्रोत्साहित

करती हैं। कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं और जागरूकता अभियानों का आयोजन करके, ऐसे क्लब नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। विद्यार्थियों की शामिल पद्धति कृषि-सम्बंधित पाठ्येतर गतिविधियों में उन्हें प्रकृति के करीब लाती है और समय के साथ टिकाऊ कृषि और पर्यावरण प्रबंधन में रुचि विकसित करती है।

4. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

शामिल करने पर ICT (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) कृषि शिक्षा रोचक और भविष्यवादी बनाता है सीखने की प्रक्रिया। डिजिटल अनुप्रयोग, ऑनलाइन लर्निंग वेबसाइटें और मोबाइल ऐप्स छात्रों को इंटरैक्टिव अध्ययन सामग्री प्रदान करते हैं, जिससे उन्नत कृषि और एग्री-बिजनेस के विचारों को आसानी से समझा जा सकता है। सिमुलेशन गेम्स और वर्चुअल फार्म मॉडल के जरिए छात्र फसल प्रबंधन, सिंचाई और कीट नियंत्रण आदि कार्यों का आभासी अभ्यास कर सकते हैं। इनमें ऐसे स्मार्ट तरीके हैं जो न केवल ज्ञान बढ़ाते हैं बल्कि नवाचार को भी बढ़ावा देते हैं और युवाओं को तकनीक-आधारित कृषि के अनुरूपण के लिए संवेदनशील बनाते हैं।

5. मूल्य आधारित शिक्षा

कृषि शिक्षा को सिर्फ तकनीकी ज्ञान में ही सीमित नहीं किया जा सकता; यह सांस्कृतिक, नैतिक और सामाजिक मूल्यों को भी विकसित करना चाहिए। कोर्स में यह प्रदर्शित करना आवश्यक है कि खेती परंपराओं, त्योहारों और समुदाय की भलाई में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और कैसे यह आजीविका और संस्कृति को बनाए रखती है। किसानों का सम्मान करना, प्राकृतिक संसाधनों

का मूल्य समझना और सामूहिक जिम्मेदारी अपनाना छात्रों में सहानुभूति और नैतिक संवेदनशीलता विकसित करता है। ऐसी मूल्य आधारित शिक्षा किशोरों को कृषि के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ती है, जिससे वे इसे केवल पेशा नहीं बल्कि सतत जीवन और सामाजिक समरसता की आधारशिला के रूप में देखते हैं।

केस स्टडी और श्रेष्ठ प्रथाएँ

भारत

CBSE और ICSE बोर्डों ने पर्यावरण अध्ययन और व्यावसायिक कृषि को स्कूल स्तर के पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया है। अटल टिकरिंग लैब्स भी एग्री-टेक नवाचार को उत्साहित करती हैं।

यूएसए

फ्यूचर फार्मर्स ऑफ अमेरिका (FFA) कार्यक्रम ने लाखों छात्रों तक कृषि विज्ञान, नेतृत्व और उद्यमिता के क्षेत्र तक पहुँच गया है।

केन्या

4K क्लब्स" (Kuungana, Kufanya, Kusaidia Kenya – जुड़ना, करना, केन्या की मदद करना) कृषि गतिविधियों और राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों को एकजुट करते हैं, जिससे युवा नेतृत्व वाली कृषि आंदोलन की शुरुआत हुई।

पाठ्यक्रम में कृषि समावेशन में चुनौतियाँ

कृषि शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं:

1. प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी – अधिकांश शिक्षक कृषि विज्ञान में

प्रशिक्षित नहीं हैं या उनके पास व्यावहारिक अनुभव नहीं है।

2. शहरीकृत पाठ्यक्रम – शहरों के पाठ्यक्रम में कृषि को आम तौर पर हाशिये पर छोड़ा जाता है, जिससे शहरी छात्रों के पास कम संभावनाएँ होती हैं।

3. सीमित संसाधन – भूमि, बगीचे या फंड की सीमित उपलब्धता व्यावहारिक अनुभव को और सीमित करती है।

4. समस्याएँ धारणात्मक – कई किशोर कृषि को आधुनिक पेशों की तुलना में "नीच" करियर मानते हैं।

5. नीतिगत खामियाँ – राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में कृषि को पर्याप्त प्राथमिकता नहीं दी गई, जिससे दीर्घकालिक एकीकरण की प्रक्रिया कमजोर होती है।

सिफारिशें

1. नीति सुधार – सरकारों को स्कूल शिक्षा में माध्यमिक स्तर तक कृषि को अनिवार्य विषय के रूप में शामिल करना चाहिए।

2. शिक्षक प्रशिक्षण – कृषि में विशेष शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल लागू किए जाने चाहिए ताकि शिक्षकों को वैज्ञानिक और व्यावहारिक कौशल प्राप्त हो।

3. सार्वजनिक-निजी भागीदारी – स्कूलों, कृषि उद्योगों और NGOs के बीच साझेदारी से संसाधन, उपकरण और फील्ड ट्रिप जैसी सुविधाएँ प्रदान की जा सकती हैं।

4. प्रौद्योगिकी का उपयोग – स्मार्ट क्लासरूम, ई-लर्निंग और डिजिटल प्लेटफॉर्म को कृषि शिक्षा में शामिल किया जाना चाहिए।

5. प्रतियोगिताएँ और प्रोत्साहन – विज्ञान मेले, नवाचार प्रतियोगिताएँ और कृषि-छात्रवृत्तियाँ छात्रों को प्रेरित कर सकती हैं।

6. पाठ्यक्रम नवाचार – स्थानीय फसलों, मिट्टी की स्थितियों और क्षेत्रीय कृषि प्रथाओं के अनुसार क्षेत्र-विशेष कृषि मॉड्यूल विकसित किए जाने चाहिए।

भविष्य की संभावनाएँ

कृषि शिक्षा का भविष्य परंपरागत ज्ञान और नई तकनीक के संयोजन में निहित है। कक्षा नवाचार का केंद्र बन सकती है, जहाँ किशोर हाइड्रोपोनिक्स, ड्रोन, एआई आधारित फार्म प्रबंधन और अधिक सतत कृषि मॉडल का अनुभव कर सकते हैं। जैसे-जैसे दुनिया क्लाउड-स्मार्ट कृषि की ओर बढ़ रही है, पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा के माध्यम से युवाओं का विकास लंबी अवधि में आजीविका और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

निष्कर्ष

कृषि केवल खेती नहीं है—यह मानव अस्तित्व, संस्कृति और सततता की आधारशिला है। शिक्षा और स्कूल पाठ्यक्रम युवाओं को कृषि से जोड़ने की क्षमता रखते हैं, जिससे वे अधिक जानकारी, जिम्मेदार और नवाचारी बन सकें। शिक्षा प्रक्रिया में कृषि जागरूकता शामिल करके हम ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं, जो खाद्य प्रणाली की सहायता करे, किसानों का सम्मान करे और सतत कृषि भविष्य को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे।